ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 13 अंक 27 कुल पृष्ठ-8 22 से 28 फरवरी, 2018 दयानन्दाब्द 193 सृष्टि सम्वत् 1960853118 सम्वत् 2074 फा. शु.-06

जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा, शामली के तत्वावधान में

आर्य सम्मेलन एवं 'वैदिक दर्पण' पत्रिका का विमोचन समारोह सम्पन्न

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का मुख्य अतिथि के रूप में हुआ ओजस्वी प्रवचन

जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा, शामली, उत्तर प्रदेश के तत्वावधान में दिनांक 17 फरवरी, 2018 को आर्य सम्मेलन एवं वैदिक दर्पण पत्रिका का विमोचन समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री रघुवीर सिंह आर्य जी ने की तथा संचालन आर्य विद्या सभा के मंत्री श्री दिनेश आर्य एवं जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा के मंत्री श्री रविन्द्र आर्य जी ने संयुक्त रूप से किया। इस अवसर पर श्री रघुवीर सिंह आर्य प्रधान आर्य उपप्रतिनिधि सभा शामली, श्री रविन्द्र आर्य मंत्री आर्य उपप्रतिनिधि सभा, श्री पूर्णचन्द्र आर्य प्रधान आर्य समाज, श्री रामेश्वर दयाल आर्य मंत्री आर्य समाज, श्री राजपाल आर्य प्रधान आर्य विद्यासभा, श्री दिनेश कुमार आर्य मंत्री आर्य विद्या सभा, श्रीमती कमला आर्या संरक्षिका स्त्री आर्य समाज, श्रीमती डॉ. मीरा वर्मा प्रधाना, श्री अर्चना आर्या मंत्राणि, श्रीमती कौशल्या आर्य उपप्रधाना, श्रीमती नीलम आर्या कोषाध्यक्षा, सुश्री श्वेता आर्या एवं मृणाली आर्या, आर्य वीरांगना परिषद्, श्री सूर्य प्रकाश प्रधान आर्य आर्य युवक परिषद् शामली एवं संरक्षक श्री वेद प्रकाश आर्य, श्री उमेश चन्द्र, ब्र. सहसरपाल आर्य, श्री अशोक बहादुर, मा. गुरुदत्त आर्य, श्री नरेश दत्त सहित अनेकों गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान पूज्य स्वामी आर्यवेश जी ने अपने धारा प्रवाह तथा ओजस्वी उद्बोधन में आर्य समाज के इतिहास पर प्रकाश डालते हुए कहा कि महर्षि दयानन्द जी ने आर्य समाज की स्थापना संसार का उपकार करने के लिए की थी, यही कारण था कि उन्होंने आर्य समाज के नियमों में छठां नियम रखा 'संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है।' अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना। उनकी मान्यता थी कि कोई भी व्यक्ति समाज का उपकार तभी कर सकता है जब शारीरिक क्षमता को प्राप्त कर जीवन में आध्यात्मिकता के आधार पर आत्मिक उन्नति न कर ले तब तक व्यक्ति समाज की उन्नति व परोपकार का कार्य नहीं कर सकता। समाज के उपकार को ध्यान में रखते हुए अपने जीवनकाल में ही स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने अनेक अनाथालय, विधवा आश्रम, कन्याओं की शिक्षा हेतु पाठ्शालाएँ तथा गुरुकुल खुलवाये साथ ही पाखण्ड को दूर कर नारियों के सर्वांगीण विकास एवं मानव निर्माण की योजनाएँ बनाई ताकि लोगों का किसी न किसी प्रकार उपकार हो सके। दलितों के उद्धार के पीछे भी उनका यही उद्देश्य था। स्वामी जी ने कहा कि सेवा भाव से परिपूर्ण होकर ही मनुष्य अपने व्यक्तित्व का विकास कर सकता है। जब हमारे मन में सेवा व परोपकार की भावना जागृत होती है तब हम अपने को समस्त अवगुणों से मुक्त कर सेवा कार्यों में संलग्न हो जाते हैं। सेवा का भाव जागृत होने पर मन में न तो ईर्ष्या, द्वेष होता है, न अहंकार और न अहं होता है, न अभिमान, न क्रोध की भावना होती है। मात्र सेवा ही उस समय सर्वोपरि होती है।

स्वामी जी ने कहा कि आर्य समाज और मानव सेवा एक दूसरे के पर्याय हैं। पूर्व में जितने भी आन्दोलन हुए चाहे वह हैदराबाद का धर्मयुद्ध हो, गौहत्या के विरुद्ध आन्दोलन हो, शराबबन्दी के लिए किये गये आन्दोलन हो, सती प्रथा के विरुद्ध आन्दोलन हो, दलितों के मंदिर प्रवेश के लिए किये गये आन्दोलन हों, कन्या भ्रूण हत्या के विरुद्ध किये गये जन–जागरण हो, चाहे भूकम्प की त्रासदी हो, चाहे बाढ़ से धन–जन की हानि हो, इन सभी कार्यों में सेवा का भाव निहित

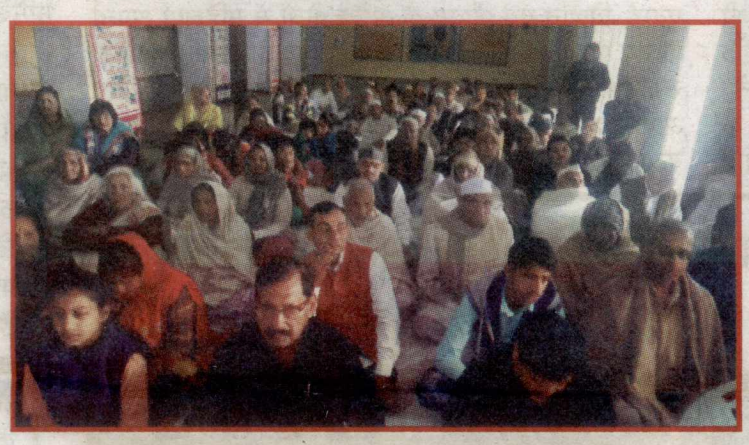

था। आर्यों ने मानव मात्र की सेवा करके अपना चतुर्दिक यश फैलाया था। आज पुनः उसी प्रकार के सेवाभाव की आवश्यकता है।

स्वामी जी ने कहा कि आज आवश्यकता इस बात की है कि हम जन–सामान्य से जुड़ें तथा लोगों के दुःख–दर्द के साथी बनें। अपने आस–पास जब किसी व्यक्ति को कष्ट होता है, समस्या होती है तो हमें उसके कष्टों को दूर करने के लिए उसके पास होना चाहिए। जब हम सामान्यजनों की सहायता करेंगे और अपने साथ जोड़ेंगे तो हमारे प्रत्येक आन्दोलन और प्रत्येक कार्य में उनको सहयोगी बना पायेंगे। हम समय–समय पर कार्यक्रम आयोजित करके सामूहिक रूप से वेद मत के विषय पर वार्ता करें और अन्धविश्वास, कुरीतियों तथा समाज में फैले धार्मिक पाखण्ड पर विशेष विचार रखें। अन्य विषयों पर भी विवेकपूर्ण प्रकाश डालें जैसे – दहेजप्रथा, रिश्वतखोरी, धार्मिक पाखण्ड, भ्रष्टाचार, महिला उत्पीड़न आदि महत्त्वपूर्ण विषयों पर जन–जागरण करें तथा घर–परिवारों, गली–मोहल्लों और गाँव में वेद ज्योति को जलायें तथा वेद ज्ञान का अमृत सभी को प्राप्त हो ऐसी योजनाएँ बनायें। मानव और मानवता हेतु जीवन का यही मुख्य कार्य है।

स्वामी जी ने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अपना सम्पूर्ण जीवन सामाजिक सुधार, राष्ट्र निर्माण, मानव निर्माण व वेद प्रचार हेतु अर्पित कर दिया था। आज उसी प्रकार के संघर्ष, त्याग, तपस्या और संकल्प की आवश्यकता है। स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि आर्य समाज क्या है? इसका इतिहास क्या है? इसकी जानकारी जनसामान्य में विलुप्त होती जा रही है। अतः आर्य समाज एवं इसके पूर्व के इतिहास के प्रति जनसामान्य में जिज्ञासा पैदा करना तथा उसकी जानकारी देना नितान्त आवश्यक है। स्वामी जी ने आमजनों का आह्वान करते हुए कहा कि हम सब आर्य, आर्य समाज के प्रारम्भिक समय के दिनों के आर्यों की सी जिम्मेदारी अनुभव करें और हम सब में वही जोश, उत्साह, पुरुषार्थ, लगन, तड़प और मिशनरी भावना का उदय हो जिससे हम आर्य समाज को पुनः बुलन्दी तक पहुँचा सके।

इस अवसर पर जिला सभा के 35 आर्य समाजों के अधिकारी तथा कार्यकर्ता भारी संख्या में उपस्थित थे। इन सभी ने स्वामी आर्यवेश जी को आश्वस्त किया कि हम सब मिलकर आर्य समाज को गति प्रदान करेंगे और अपने क्षेत्र में एक साल में आर्य समाजों की संख्या दोगुनी करके दिखायेंगे।

इस अवसर पर 'वैदिक दर्पण' पत्रिका का विमोचन स्वामी आर्यवेश जी के कर–कमलों तथा अन्य महानुभावों के द्वारा किया गया। विमोचन समारोह का संयोजन आर्य विद्यासभा के प्रधान श्री राजपाल आर्य ने किया। स्वामी आर्यवेश जी का भव्य स्वागत किया गया। स्वागत करने वालों में श्री रघुवीर सिंह आर्य प्रधान आर्य उपप्रतिनिधि सभा शामली, श्री रविन्द्र आर्य मंत्री आर्य उपप्रतिनिधि सभा, शामली, श्री पूर्णचन्द्र आर्य प्रधान आर्य समाज शामली, श्री रामेश्वर दयाल आर्य मंत्री आर्य समाज शामली, श्री राजपाल आर्य प्रधान आर्य विद्यासभा शामली, श्री दिनेश कुमार आर्य मंत्री आर्य विद्या सभा आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। कार्यक्रम में पं. नरेशदत्त आर्य के भजनों का विशेष प्रभाव रहा। आचार्य गुरुदत्त आर्य ने भी सभा को सम्बोधित किया।

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

शादीपुर–जुलाना, जिला–जीन्द, हरियाणा में भूमि अधिग्रहण के मुआवज़े को लेकर ग्रामीणों के धरने को सम्बोधित किया सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने

शादीपुर जुलाना, जिला–जीन्द, हरियाणा में ग्रामीणों के भूमि अधिग्रहण के मुआवज़े को लेकर चल रहे विशाल धरने को गत् 3 फरवरी, 2018 को सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने सम्बोधित कर ग्रामीणों की माँग का समर्थन किया। विदित हो कि जुलाना क्षेत्र में 11 गाँव जिनमें पौली, किला जफरगढ़, ब्राह्मणवास, बूढ़ा खेड़ा, शादीपुर, जुलाना, करसोला, जैजैवन्ती, गतौली, गोसाईं खेड़ा तथा किनाना आदि गाँव की जमीन नेशनल हाईवे सड़क के निर्माण के लिए अधिग्रहीत की गई थी, इसी प्रकार अशरफगढ़, बिरौली, बिसनपुरा, अनूपगढ़ आदि गाँव की भी जमीन अधिग्रहीत की गई थी। अधिग्रहण का मूल्य प्रति एकड़ अशरफगढ़ में 15 लाख, बिरौली में 12 लाख, बिसनपुरा में 15 लाख तथा अनूपगढ़ में 24 लाख प्रति एकड़ तय हुआ था जिसके खिलाफ इन चारों गाँवों के लोगों ने धरना दिया, आवाज उठाई तो उन्हें अशरफगढ़ में 15 लाख के बदले 65 लाख, बिरौली में 12 लाख के बदले 60 लाख, बिसनपुरा में 15 लाख के बदले 58 लाख और अनूपगढ़ में 24 लाख के बदले 58 लाख प्रति एकड़ के हिसाब से भुगतान कर दिया गया। जबकि अन्य 11 गाँव में जो रेट तय किया गया था उसके बदले उपरोक्त चार गाँव को किये गये भुगतान के अनुसार मुआवज़ा देने से मना करने पर इन 11 गाँव के लोगों ने धरना आयोजित किया हुआ है। विदित हो कि इन 11 गाँव में निर्धारित रेट पौली में 18 लाख, किला जफरगढ़ में 18 लाख, ब्राह्मणवास में 15 लाख, बूढ़ा खेड़ा में 20 लाख, शादीपुर में 15 लाख, जुलाना में 25 लाख, करसोला में 20 लाख, जैजैवन्ती में 22 लाख, गतौली में 20 लाख, गोसाईं खेड़ा में 22 लाख तथा किनाना में 25 लाख रुपया प्रति एकड़ तय हुआ था। ग्रामीणों की माँग है कि उन्हें भी चार गाँव को दिये गये नये मुआवज़े रेट के अनुसार मुआवज़ा दिया जाये नहीं तो वे अपनी जमीन का अधिग्रहण किसी भी कीमत पर नहीं करने देंगे।

स्वामी आर्यवेश जी ने ग्रामीणों की माँग को न्यायोचित एवं जायज बताते हुए सरकार से माँग की कि पक्षपात की नीति छोड़कर सरकार को ग्रामीणों के साथ न्याय करना चाहिए तथा उनकी जमीन का नये रेट से मूल्यांकन करके उचित मुआवज़ा देना चाहिए। स्वामी जी ने आर्य समाज की ओर से धरने का समर्थन किया और सहयोग का आश्वासन दिया। धरने की अध्यक्षता स्थाई रूप से शादीपुर, जुलाना के पूर्व सरपंच श्री ओम प्रकाश लाठर कर रहे हैं। उनके अतिरिक्त श्री राममेहर राजगढ़, श्री कृष्ण ढांढा, श्री ओम प्रकाश लाठर, श्री जसवन्त सिंह आर्य, श्री धूपसिंह बेनीवाल, श्री जिले सिंह, श्री कर्ण सिंह, श्री परमेन्द्र व श्री मनोज कुमार आदि भी धरने पर उपस्थित थे। श्री वीरेन्द्र आर्य धरने के संयोजन में मुख्य भूमिका निभा रहे हैं। धरने के अध्यक्ष श्री ओम प्रकाश लाठर ने स्वामी जी के द्वारा दिये गये समर्थन के लिए कोटिशः धन्यवाद ज्ञापित किया तथा आर्य समाज की भी विशेष प्रशंसा की।

कन्या गुरुकुल खरल, जिला–जीन्द, हरियाणा के वार्षिकोत्सव पर सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का सान्निध्य पाकर कार्यकर्ताओं में बढ़ा उत्साह

कन्या गुरुकुल खरल, जिला–जीन्द, हरियाणा के वार्षिकोत्सव पर 3 फरवरी, 2018 को गुरुकुल की प्रबन्ध समिति के निमंत्रण पर सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी मुख्यअतिथि के रूप में उत्सव में सम्मिलित हुए। उनके साथ नशाबन्दी परिषद् के अध्यक्ष स्वामी रामवेश जी भी विशिष्ट अतिथि के रूप में उत्सव में पधारे।

सर्वप्रथम गुरुकुल की आचार्या डॉ. दर्शना कुमारी ने स्वामी आर्यवेश जी को महर्षि दयानन्द जी का एक चित्र भेंटकर सम्मानित किया। उनके अतिरिक्त गुरुकुल के प्रधान चौ. कलीराम जी, श्री दिलबाग सिंह शास्त्री, श्री अतर सिंह स्नेही एवं अन्य प्रमुख सदस्यों ने माल्यार्पण कर स्वामी जी का स्वागत किया। कार्यक्रम में स्वामी आर्यवेश जी के अतिरिक्त स्वामी रामवेश जी, श्री रामपाल दहिया, श्री अतर सिंह स्नेही, श्री चन्द्रप्रकाश वेदी, प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री सहदेव बेधड़क एवं सुमित्रा आर्या ने भी अपने विचार प्रस्तुत किये।

स्वामी आर्यवेश जी ने अपने उद्बोधन में गुरुकुल की लगभग 3 हजार छात्राओं को विशेष प्रेरणा देते हुए कहा कि वे अपने आत्मविश्वास, स्वाभिमान एवं गौरव को पहचानें। महिलाएँ किसी भी क्षेत्र में पुरुषों से पीछे नहीं हैं। खेल के मैदान से लेकर युद्ध के मैदान तक हर क्षेत्र में महिलाएँ अपना वर्चस्व कायम करने में सफल हो रही हैं। स्वामी जी ने कहा कि झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, किरणमयी दुर्गावती आदि वीरांगनाओं के नाम हम इतिहास के पन्नों पर पढ़ते रहे हैं और उनके शौर्य और बलिदान से प्रेरणा लेते रहे हैं। आज भी अनेक महिलाएँ प्रेरणा की स्रोत बन चुकी हैं। जिन्होंने अपने पुरुषार्थ से बहुत बड़े–बड़े कार्य करके दिखाये हैं। भारत में ही नहीं पूरे विश्व की राजनीति में राष्ट्राध्यक्ष एवं राष्ट्रपति तथा प्रधानमंत्री के पद पर अनेक विदुषी महिलाओं ने प्रतिष्ठित होकर यह सिद्ध करके दिखा दिया है कि वे राजनीति में पुरुषों के बराबर योग्यता एवं प्रभाव रखती हैं। सेनाओं तथा अर्द्धसैनिक बलों में अब बड़े से बड़े पदों पर महिलाएँ प्रतिष्ठित हो रही हैं तथा महिलाओं की पलटन देश की सीमाओं पर दिन–रात पुरुषों की तरह पहरा देती हैं। कंधे पर राइफल टांगकर बॉर्डर की सुरक्षा करना पुरुषों का ही कार्य माना जाता था जिसे अब महिलाओं ने भी करके दिखा दिया है। इसी प्रकार खेलकूद, पढ़ाई, विज्ञान एवं जीवन के अनेक क्षेत्रों में महिलाएँ अपना परचम फहरा रही हैं। अतः अब आवश्यकता है महिलाओं के स्वाभिमान एवं आत्मविश्वास को जगाने की। इसके लिए आवश्यक है कि महिलाएँ कन्या भ्रूण हत्या, नशाखोरी, बलात्कार एवं दुष्कर्म जैसी घटनाओं के विरुद्ध मजबूती से खड़ी हो जायें और अपने सम्मान एवं प्रतिष्ठा की रक्षा के लिए अश्लीलता आदि अपसंस्कृति को उखाड़ फेंके। गुरुकुल की छात्राओं को इस दिशा में विशेष प्रयत्न करना चाहिए।

स्वामी आर्यवेश जी ने सभागार में उपस्थित हजारों छात्राओं और उनके अभिभावकों का आह्वान किया कि अब समय आ गया है कि हम सभी लोग समाज में बढ़ती हुई कुरीतियों के विरुद्ध अभियान चलायें। समाज में प्रचलित जातिवाद, साम्प्रदायिकता, नशाखोरी, भ्रष्टाचार, धार्मिक पाखण्ड, महिला उत्पीड़न तथा शोषण के विरुद्ध एकजुट होकर कार्य करने की जरूरत है। आर्य समाज के प्रर्वतक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने हमें समाज में व्याप्त असमानता एवं गैर–बराबरी को समाप्त करने तथा वर्णाश्रम व्यवस्था के आधार पर वैदिक समतामूलक समाज बनाने का दायित्व सौंपा है। इसके लिए हम सभी अपनी–अपनी भूमिका अपने–अपने स्तर के अनुसार निभाने लगें तो समाज में व्यवस्था परिवर्तन किया जा सकता है। स्वामी जी ने धर्म के नाम पर हो रहे पाखण्ड एवं अन्धविश्वास की भी कड़े शब्दों में आलोचना की। गुरुकुल की आचार्या विदुषी बहन डॉ. दर्शना जी के प्रति सम्मान व्यक्त करते हुए स्वामी जी ने कहा कि बहन जी ने अपना पूरा जीवन इस संस्था के लिए समर्पित किया हुआ है और वे अपने स्वास्थ्य की परवाह किये बिना ही हजारों बेटियों का निर्माण कर रही हैं। इसके लिए पूरा समाज उनका ऋणी रहेगा। हमें उनके स्वास्थ्य की भी चिन्ता करनी चाहिए और उनका सर्वप्रकार से सहयोग करके संस्था के बोझ को कम करना चाहिए।

आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के सौजन्य से तथा वैदिक मिशन मुम्बई के तत्वावधान में आर्य समाज सांताक्रुज मुम्बई में

वेदों में शिक्षा विज्ञान विषय पर संगोष्ठी का आयोजन

दिनांक : 24 व 25 मार्च, 2018

आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के सौजन्य से तथा वैदिक मिशन मुम्बई की ओर से दिनांक 24 व 25 मार्च, 2018 को स्वामी प्रणवानन्द जी (दिल्ली) की अध्यक्षता में आर्य समाज सांताक्रुज मुम्बई में 'वेदों में शिक्षा विज्ञान' के विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया है जिसमें सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी (दिल्ली) एवं स्वामी धर्मानन्द जी (गुरुकुल आमसेना) विशेष अतिथि रहेंगे।

इस संगोष्ठी में गुरुकुलों के आचार्य एवं आचार्या तथा गुरुकुलों के प्रतिष्ठित स्नातक, गुरुकुलों की वर्तमान समय में उपयोगिता तथा एकरूपता, आर्ष पाठ विधि की महत्ता, इसमें उपस्थित बाधाएँ, गुरुकुलों के स्थान पर अन्य शिक्षा प्रणाली का प्रचलन, आर्य समाज के लिए हितकारी या अहितकारी, अथर्ववेद के ब्रह्मचर्य सूत्र आदि विषयों पर गहन चिन्तन किया जायेगा। अधिक से अधिक संख्या में पधारकर कार्यक्रम को सफल बनायें।

– आचार्य सोमदेव शास्त्री, अध्यक्ष वैदिक मिशन मुम्बई, डी–309, मिल्टन अपार्टमेंट, जुहू कोलीवाड़ा, मुम्बई, मो.:– 9869668130

सीनियर सिटीजन्स ने दी पर्यावरण रक्षा व विश्व कल्याण हेतु आहुतियाँ

प्रकृति और परमात्मा के नियम सर्व कल्याणकारी – यशपाल 'यश'

जयपुर, सीनियर सिटीजन्स फोरम् ने मानसरोवर के डे केयर सेण्टर पर यज्ञ का आयोजन किया । यज्ञ के ब्रह्मा सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् प्रदेशाध्यक्ष यशपाल 'यश' रहे। यश ने चन्द्र ग्रहण को खगोलीय घटना बता विना भयभीत हुए प्रकृति और परमात्मा के सर्व कल्याण कारी सरल नियमो की पालना से मोक्ष गामी बने रहने का आवाहन किया।यश ने

पूर्णिमा की आग्नेय, अग्नि सोमाभ्याम् तथा विष्णवे स्वाहा की आहुतियाँ दिलाकर कहा कि यज्ञ ही विष्णु है जो सुहृद प्रजापालक है। यजमान डी.के. गुप्ता दम्पत्ति रहे।

फोरम् अध्यक्ष किशनलाल छत्तानी, सचिव ए पी शर्मा ने स्वागत व आभार जताया। ओ.पी. गुप्ता व बाबूलाल आर्य आदि विशेष रूप से मौजूद रहे।

27 फरवरी बलिदान दिवस पर विशेष

अग्निशलाका पुरुष – चन्द्रशेखर आजाद

– मनुदेव 'अभय' विद्यावाचस्पति

स्वतन्त्रता प्राप्ति से पूर्व 556 देशी रियासतों में से गुजरात से सटे हुए क्षेत्र में अलीराजपुर नामक (सम्प्रति मध्य प्रदेश) रियासत के झाबुआ जिले में एक छोटा सा ग्राम था 'भाबरा'। इसी गाँव में पं. सीताराम जी तिवारी तथा जगरानी देवी, साधारण सा कान्य कुब्ज ब्राह्मण परिवार निवास करता था। इनके ही निकट अग्निहोत्री जी का परिवार कृषि आदि कार्य कर निर्वाह करता था। इन्हीं पं. सीताराम जी तिवारी के यहाँ 23 जुलाई, 1906 को एक पुत्र रत्न ने जन्म लिया। शैव परिवार की मान्यताओं के अनुसार इस बालक का नाम 'चन्द्रशेखर' रखा गया। 5 वर्ष की आयु के पश्चात् स्थानीय पाठशाला में इनकी प्रारम्भिक शिक्षा प्रारम्भ हुई। ब्राह्मण परिवार के सात्विक संस्कारों के कारण इस बालक में 'संस्कृत' पढ़ने की तीव्र इच्छा हुई। बालक चन्द्रशेखर ने अपनी यह इच्छा पिताश्री से कही। किन्तु पारिवारिक स्थिति के कारण पिता जी ने उन्हें काशी भेजने में अपनी असमर्थता प्रकट की। किन्तु दृढ़ निश्चयी बालक एक दिन चुपचाप घर से निकलकर काशी पहुँच गया। वहाँ एक गुरुवास में रहकर वे संस्कृत का अध्ययन रुचिपूर्वक करने लगे।

इधर नियति कुछ और ही निश्चय किए बैठी थी। गाँधी जी ने 'असहयोग आन्दोलन' छेड़ दिया था। यह 15 वर्षीय बालक इस आंधी की चपेट से दूर कैसे रह सकता था?काशी में छिड़े आन्दोलन ने इस किशोर बालक चन्द्रशेखर ने पुलिस के क्रूर व्यवहार से नाराज होकर एक पत्थर से पुलिसकर्मी को घायल कर दिया। पुलिसकर्मी गण इस युवक को पहले तो पकड़ नहीं सके, किन्तु मस्तक पर लगे चन्दन के टीके के कारण ये पहचान में आ गए। उन्हें पकड़कर तत्काल मजिस्ट्रेट के सामने पेश किया गया। युवक चन्द्रशेखर से मजिस्ट्रेट ने पूछा –

तुम्हारा क्या नाम है?युवक ने अपना नाम 'आजाद' बताया।

तुम्हारे पिता का नाम?'स्वतन्त्र'

तुम्हारे घर का पता?मेरा घर 'जेलखाना' है।

बालक के इन उत्तरों को मजिस्ट्रेट को प्रथमतः आश्चर्य हुआ। उसने तत्काल चन्द्रशेखर को 15 बेतों की सज़ा सुनाई। प्रामाणिक रूप से बताया जाता है कि जब युवक चन्द्रशेखर के खुले बदन पर पानी में भीगी बेंत पड़ती थी, तब प्रत्येक बेंत की मार पर वे जोर से नारे लगाते थे – इन्कलाब जिन्दाबाद, महात्मा गांधी की जय। यह देखकर पुलिसकर्मी भी बेंत मारते हुए थोड़ा ठिठक जाते थे। वहाँ से छूटकर इस युवक चन्द्रशेखर ने प्रतिज्ञा की कि –

दुश्मन की गोलियों का हम सामना करेंगे।
आजाद ही रहे हैं, आजाद ही रहेंगे।।

इधर कतिपय हिंसक घटनाओं के कारण गांधी जी ने 'असहयोग आन्दोलन' एकाएक बन्द कर दिया। इससे युवा आन्दोलनकारियों को बहुत ठेस पहुँची। युवक चन्द्रशेखर के हृदय में अंग्रेजों के विरूद्ध आग भड़क रही थी। संयोगवश उनकी भेंट एक महान क्रान्तिकारी रामप्रसाद बिस्मिल से काशी में हो गई। आजाद तत्काल क्रान्तिकारी दल में जो कि अहिंसा में तनिक भी विश्वास नहीं करता था, सम्मिलित हो गए। इस दल को वे सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश में जाल के समान फैला देना चाहते थे। किन्तु इस कार्य में एक बड़ी बाधा आ रही थी। हमारे शास्त्रों में ठीक ही कहा है – अर्थ के बिना सब व्यर्थ है। क्रान्तिकारियों के लिए अस्त्र–शस्त्रों को उपलब्ध करवाने के लिए धन की बहुत आवश्यकता थी। कहते हैं, एकबार चन्द्रशेखर ने बैंक लूटने का प्रयास किया किन्तु असफल रहे उन्होंने काशी में एक क्रान्तिकारी पर्चा तैयार कर उसे अनेक स्थानों पर वितरित करा दिया। यह काम उन्होंने बहुत चतुराई से किया था। किन्तु यह पर्चा किसी तरह पुलिस दफ्तर तक पहुँच गया था।

परमात्मा की कृपा से इन अलौकिक महापुरुषों में कुछ न कुछ अलौकिक गुण उत्पन्न हो जाते हैं। हमारे चरित् नायक चन्द्रशेखर 'आजाद' गोली चलाने में सिद्धहस्त थे। अपने मित्रों के अनुरोध पर उन्होंने पेड़ की टहनी के एक बड़े पत्ते में पाँच अलग–अलग छेद पिस्तौल की गोली से कर दिए थे। उनका निशाना अचूक होता था। आजाद को अपने क्रान्तिकारी साथियों के खाने–पीने की हमेशा चिन्ता बनी रहती थी। इधर भाबरा (अलीराजपुर–झाबुआ) में उनके माता–पिता बहुत ही विपन्न अवस्था में दिन व्यतीत कर रहे थे। श्री गणेश शंकर जी विद्यार्थी को जब इस बात का पता चला, तब उन्होंने कुछ रुपये आजाद को उनके माता–पिता को भेजने के लिए दिए। किन्तु अब तो आजाद का परिवार तो सम्पूर्ण राष्ट्र बन चुका था और क्रान्तिकारी लोग इस राष्ट्र–परिवार के निकटतम सम्बन्धी बन चुके थे। आजाद जी वह रकम क्रान्तिकारियों के लिए पिस्तौल आदि खरीदने पर खर्च कर दिए। आजाद को अपने माता–पिता से पहले भारत को स्वतन्त्र कराने वाले भारत माता पर मर मिटने वाले भारत–माँ के पुत्रों की अधिक चिन्ता थी। उन्होंने यह राशि 'राष्ट्र देवो भवः कहकर' 'इदमं न मम्' के भाव के अनुसार क्रान्तिकारियों पर न्यौछावर कर दी। यह महान त्याग था, उस महान कर्मयोगी चन्द्रशेखर आजाद का।

रामप्रसाद बिस्मिल, चन्द्रशेखर आजाद, अशफाक उल्ला खाँ अन्य क्रान्तिकारियों के सहयोग से 9 अगस्त, 1925 को सरकारी खजाना लूटने के योजना बनाई गई। काकोरी रेलवे स्टेशन (उ. प्र.) में रेल रोककर सरकारी खजाना पिस्तौल के बल पर लूट लिया गया। अंग्रेजों के

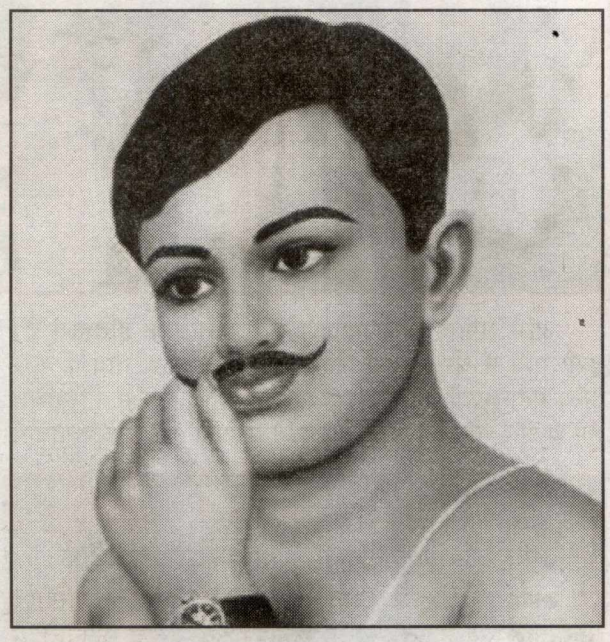

आश्चर्य का ठिकाना न रहा। काकोरी ट्रेन लूट–काण्ड में अनेक क्रान्तिकारी पकड़े गये। परिणामतः रामप्रसाद जी 'बिस्मिल' तथा अशफाक उल्ला खाँ को फांसी की सज़ा सुना दी गई। किन्तु सौभाग्य से चन्द्रशेखर आजाद को पुलिस न पकड़ सकी। इस भयंकर काण्ड एवं परिणाम के कारण क्रान्तिकारी दल छिन्न–भिन्न हो गया।

इतने पर भी चन्द्रशेखर आजाद तनिक भी निराश नहीं हुए वे महान् क्रान्तिकारी युग पुरुष वीर विनायक दामोदर सावरकर के निकट उचित परामर्श लेने गए। वीर सावरकर ने उन्हें ढाढस बंधाया तथा क्रान्तिकारी दल को पुनर्गठित करने का परामर्श दिया। वे अब पुनः संगठन में जुट गए। प्रसंगवशात् झांसी में उनकी भेंट भगतसिंह तथा राजगुरु से हुई। इतना ही नहीं, कुछ समय पश्चात् उनसे बटेश्वर दत्त और अन्य अनेक क्रान्तिकारी आ मिले। इस बार उन्होंने नये दल का नाम हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी' रखा। इसके पुनर्गठन की पृष्ठभूमि में वीर सावरकर की ही प्रेरणा कार्य कर रही थी।

अक्टूबर, 1928 में साइमन कमीशन भारत आया इस कमीशन के सारे सदस्य अंग्रेज ही थे, इसमें एक भी भारतीय को नहीं रखा गया था। यह भारत का बड़ा भारी अपमान था। यह कमीशन बम्बई के पश्चात् जब लाहौर आया, तब रेलवे स्टेशन पर ही इसका विरोध करने के लिए शेरे पंजाब, लाला लाजपतराय गए। अंग्रेज पुलिस ने लालाजी पर प्राणघातक आक्रमण किया। लाठी की गम्भीर चोटों के कारण लालाजी की मृत्यु हो गई। विरोध कर रहे जुलूस में भगतसिंह और राजगुरु भी थे। उन्होंने यह काण्ड स्वयं अपनी आँखों से देखा था।

भगतसिंह तथा राजगुरु ने यहाँ यह व्रत लिया कि लालाजी के हत्यारे पुलिस कप्तान सैडर्स से बदला नहीं ले लेंगे, तब तक चैन नहीं लेंगे। बस फिर क्या था, योजनानुसार इन दोनों वीरों ने 'खून का बदला' खून से लिया। भगतसिंह को पकड़ने के लिए पुलिस ने बड़ा प्रयत्न किया, किन्तु उसे निराशा हाथ लगी। भगतसिंह वेश बदलकर कलकत्ते चले गए। आजाद साधु के वेश में 'अलख निरंजन' का नाद करते हुए लाहौर से गायब हो गए।

9 अप्रैल, 1929 ई. को असेम्बली में 'पब्लिक सेफ्टी बिल' प्रस्तुत होने वाला था। जिसके अनुसार भारतीय मजदूरों की हड़तालों पर स्थाई रोक लगाना था। इस अत्याचारी दमनात्मक बिल का विरोध करने के लिए भगतसिंह और बटेश्वर दत्त दिल्ली जा पहुँचे। यद्यपि इसमें आजाद भी सम्मिलित होना चाहते थे, किन्तु नीति के अनुसार इन्हें अलग रखकर संगठन कार्य करने के लिए कहा गया। इन दोनों वीरों ने असेम्बली की दर्शकदीर्घा से अंग्रेजों की दमननीति का भण्डा फोड़ने वाले पर्चे फेंके तथा खाली बेंचों पर बम फेंके। ये लोग असेम्बली से बाहर ही भागते हुए पकड़ लिए गए। इसके बाद राजगुरु, सुखदेव तथा यशपाल भी गिरफ्तार कर लिए गए। चन्द्रशेखर आजाद पुलिस की गिरफ्त से बाहर ही रहे। इधर भगवती चरण वर्मा की बम फटने से अकाल मृत्यु हो गई थी। इन क्रान्तिकारियों पर मुकदमा चला, अन्त में भगत सिंह सुखदेव तथा राजगुरु को 23 मार्च, 1937 को फांसी दे दी गई। लार्ड डरविन ने गांधी जी को इसमें हस्तक्षेप कर उन्हें आजीवन कारावास कर देने के लिए कहा था। किन्तु गांधी जी ने इस ओर ध्यान ही नहीं दिया। लार्ड डरविन भी गांधी जी की इस कठोरता पर तथा गजब की अहिंसा पर घृणा से उनकी ओर देख रहा था। उसका मत था कि यदि गांधी जी इसमें हस्तक्षेप करते तो इन वीरों को फांसी पर लटकने से बचाया जा सकता था। इतना ही नहीं गांधी जी ने कांग्रेस का अधिवेशन जानबूझकर 22 मार्च को ही समाप्त करवा दिया था, ताकि कांग्रेस में विद्रोह न हो। इस दुखद घटना के पश्चात् क्रान्तिकारी दल पुनः छिन्न–भिन्न हो गया।

दल का धन व्यापारी के यहाँ रखा गया था। उस धन को लेने हेतु वे इलाहाबाद गए। ऐसे समय में उनके ही निकट के सहयोगी की देश द्रोहिता के कारण आजाद जी संकट में फंस गए। बिसेसर नामक इस देश द्रोही ने पुलिस का मुखबिर बन कर नाट बाबर जो कि वहां का पुलिस अधीक्षक था, को सूचना दे दी कि आज 'अल्फ्रेड पार्क' में आजाद अपने मित्र के साथ वहाँ मिलेंगे। बस, सूचना मिलते ही नॉट बाबर अपने दल–बल के साथ अल्फ्रेड पार्क (सम्प्रति चन्द्रशेखर आजाद पार्क) पहुँच गया। आजाद जी को इस विश्वासघात की भनक लग गई और उन्होंने फुर्ती से अपने सहयोगी को पार्क से बाहर खिसक जाने के लिए कहा। वह वहां से चला गया। वे अब अकेले ही पुलिस का मुकाबला करने के लिए तैयार हो गए। फिर क्या था ..... धांय–धांय कर दोनों ओर से गोलियां चलने लगीं। आजाद ने अपनी अचूक निशानेबाजी से अनेक पुलिस वालों को ढेर कर लिया। इधर उन्होंने भी एक वट वृक्ष की आड़ ले ली। फिर भी उन्हें चार गोलियां लग गई। पुलिस उन्हें जीवित पकड़ना चाहती थी। उन्होंने प्रतिज्ञा कर रखी थी कि वे जिन्दा रहते हुए पुलिस की पकड़ में नहीं आयेंगे। जब उनकी पिस्तौल में अन्तिम गोली रह गई, तब उन्होंने उस अन्तिम गोली अपनी कनपटी में मार ली। यह दुर्भाग्यपूर्ण दिवस 27 फरवरी, 1931 का प्रातः साढ़े दस बजे का था। अंग्रेज आजाद से इतने डरे हुए थे कि उन्हें पूरा मरा हुआ जानने के लिए उनके मृत शरीर पर गोली मारी। जब मृत शरीर में हलचल न हुई तब पुलिस उनके शव के पास जाने का साहस जुटा पाई।

जिस वटवृक्ष के नीचे आजाद का यह महान् बलिदान हुआ था उसे आज भी वहां की महिलाएँ हल्दी कंकू तथा सूत के धागे लपेट कर उसकी पूजा प्रतिवर्ष करती हैं। इन पंक्तियों के लेखक को भी उस वट वृक्ष के नीचे पड़ी धूल को सिर पर रख कर उस महान वीर को प्रणाम करने का दो बार स्वर्ण अवसर मिल चुका है।। इस प्रकार चन्द्रशेखर आजाद इस देश के जाज्वल्यमान नक्षत्र हैं। उन्हें बारम्बार प्रणाम।

आर्य समाज ढोला माजरा, जिला सहारनपुर में ऋषि बोधोत्सव पर

वैदिक सत्संग समारोह सम्पन्न

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी मुख्य अतिथि के रूप में पधारे

आर्य समाज ढोला माजरा, जिला–सहारनपुर, उ. प्र. में 11, 12 व 13 फरवरी, 2018 को ऋषि बोध दिवस के अवसर पर वैदिक सत्संग समारोह का विशाल आयोजन किया गया। समारोह में युवा विद्वान् श्री कुंवरपाल शास्त्री यज्ञ के ब्रह्मा एवं स्वामी अखण्डानन्द जी मुख्य वक्ता के रूप में पधारे। उनके अतिरिक्त प्रसिद्ध भजनोपदेशक महाशय रूबेल सिंह जी, महाशय राजवीर सिंह आर्य, महाशय कल्याण सिंह आर्य की भजन मण्डलियाँ सम्मिलित हुई। इस अवसर पर 13 फरवरी, 2018 को सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी मुख्य अतिथि के रूप में समारोह में सम्मिलित हुए थे। स्वामी जी के गाँव में पहुँचने पर सैकड़ों आर्य महानुभावों ने स्वागत किया और ढोल नगाड़े एवं नारों के साथ जुलूस के रूप में स्वामी जी को समारोह स्थल पर ले जाया गया।

प्रातः यज्ञ के उपरान्त स्वामी आर्यवेश जी का संक्षिप्त प्रवचन एवं मध्यान्ह 2 से 5 बजे तक आयोजित मुख्य समारोह में मुख्य भाषण हुआ। स्वामी जी का मंच पर श्री अजब सिंह आर्य पूर्व प्रधान जिला आर्य प्रतिनिधि सभा सहारनपुर, पं. देवदत्त आर्य, श्री सुखपाल मुखिया ग्राम पंचायत प्रधान, श्री सम्राट सिंह, भारत स्वाभिमान के मण्डल प्रभारी श्री ऋषिपाल आर्य, मा. अजब सिंह, आचार्य कुंवर पाल शास्त्री, श्री धर्मवीर, श्री धर्मपाल आर्य, श्री धीरज सिंह आर्य, श्री ओंकार नम्बरदार, मा. श्यामसिंह, मा. सुरेश आर्य, मा. कृष्णचन्द्र त्यागी योग शिक्षक, मा. श्याम सिंह आर्य, श्री योगेन्द्र आर्य, श्री राजकुमार, कार्यक्रम के संयोजक श्री आनन्द प्रकाश आर्य तथा आर्य समाज के युवा मंत्री श्री विपिन आर्य, महाशय रूबेल सिंह, महाशय राजवीर आर्य, महाशय कल्याण सिंह आदि ने माल्यार्पण कर स्वागत किया। आर्य समाज की ओर से श्री आनन्द प्रकाश ने स्वामी आर्यवेश जी के सम्मान में अभिनन्दन पत्र पढ़कर सुनाया और सभी प्रतिनिधियों ने मिलकर स्वामी जी को भेंट किया।

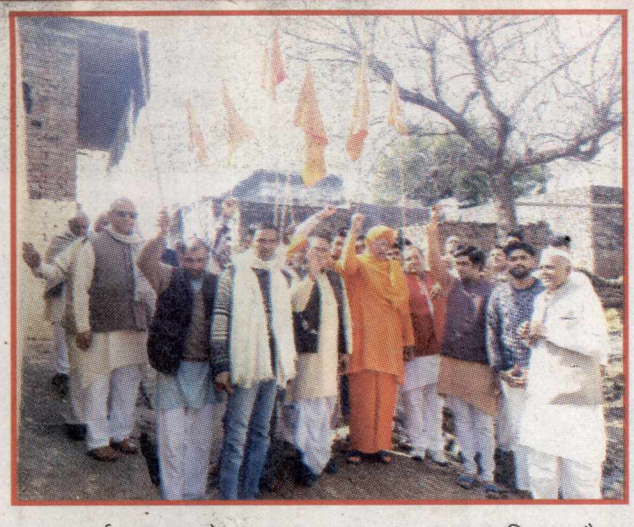

आर्य समाज ढोला माजरा का अपना एक इतिहास है। इसी गाँव में श्री सुनहरा सिंह आर्य अपने साथ गाँव के चार अन्य महानुभावों को लेकर हैदराबाद आन्दोलन में सम्मिलित हुए थे और गाँव का प्रतिनिधित्व किया था। इसी प्रकार गाँव में

महात्मा प्यारे जी महाराज ने सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध आवाज बुलन्द की तथा आर्य सिद्धान्तों के प्रचार–प्रसार में विशेष योगदान दिया। ऐसे स्वतंत्रता सेनानियों एवं देशभक्तों के गाँव में आर्य समाज का यह सत्संग समारोह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण था। इसी को ध्यान में रखते हुए स्वामी आर्यवेश जी, ब्र. दीक्षेन्द्र जी के साथ इस गाँव में पहुँचे। स्वामी जी के ओजस्वी उद्‌बोधन से इलाके के 10–15 गाँवों से पधारे प्रतिष्ठित आर्य महानुभाव अत्यन्त प्रभावित हुए और उन्होंने स्वामी जी को आश्वासन दिया कि वे आर्य समाज के मिशन को आगे बढ़ाने में उनका तन–मन–धन से सहयोग करेंगे। स्वामी जी ने घोषणा की कि शीघ्र ही गाजियाबाद से सहारनपुर तक की जन–चेतना यात्रा निकाली जायेगी जिसमें सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध लोगों को जागरूक किया जायेगा। स्वामी जी की घोषणा से लोगों में विशेष ऊर्जा तथा उत्साह का संचार हो गया और यात्रा को सफल बनाने की जिम्मेदारी उन्होंने ली।

अपने एक घण्टे के ओजस्वी उद्‌बोधन में स्वामी आर्यवेश जी ने धार्मिक पाखण्ड एवं अन्धविश्वास को समाज के पतन का मुख्य कारण बताया और वैदिक सिद्धान्तों को प्रचारित–प्रसारित करने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि आर्य समाज अब मानव मात्र के दुःख दर्द का साथी बने, लोगों की समस्याओं को दूर करने में उनके साथ खड़ा हो। नशाखोरी, जातिवाद, महिलाओं पर हो रहे अत्याचार तथा युवाओं के चारित्रिक पतन को रोकने के लिए आर्य समाज आगे आये और देश को नेतृत्व प्रदान करे।

कार्यक्रम के संयोजक श्री आनन्द प्रकाश आर्य एवं आयोजक श्री विपिन आर्य ने कार्यक्रम की सफलता में विशेष भूमिका निभाई। इस अवसर पर प्रमुख युवा कार्यकर्ताओं को स्वामी जी के कर–कमलों से प्रशस्ति पत्र दिलवाकर सम्मानित किया गया।

आर्य जगत् के प्रसिद्ध संन्यासी स्वामी शक्तिवेश जी महाराज का 29वाँ बलिदान दिवस श्रद्धा पूर्वक मनाया गया

झज्जर, 30 व 31 जनवरी, 2018, आर्य जगत् के संन्यासी स्वामी शक्तिवेश जी महाराज का 29वें बलिदान दिवस श्रद्धापूर्वक सैकड़ों लोगों की उपस्थिति में मनाया गया। इस दो दिवसीय वैदिक सत्संग कार्यक्रम में गायत्री महायज्ञ के यज्ञ ब्रह्मा आचार्य बालेश्वर जी रहे। सम्पूर्ण समारोह की अध्यक्षता स्वामी धर्ममुनि जी बहादुरगढ़ ने की। प्रथम दिन के कार्यक्रम के आयोजक श्री ओम प्रकाश यादव तथा यजमान कर्णसिंह व सरला, राहुल व सपना, अनिल व मनीषा रहे। अंतिम दिन के कार्यक्रम के आयोजक पं. जय भगवान आर्य तथा यजमान देवेन्द्र, विवेक, कुनाल रहे।

इस अवसर पर मुख्य वक्ता स्वामी आर्यवेश जी महाराज ने कहा कि हमें पाखण्ड मुक्त, नशामुक्त, अन्याय मुक्त व बेटी युक्त समाज का निर्माण करना चाहिए। ऐसा ही स्वामी शक्तिवेश जी महाराज चाहते थे। उन्होंने स्वामी शक्तिवेश जी द्वारा राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा, वैदिक आश्रम रेवाड़ी, गुरुकुल घासेड़ा व गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ में किये गये कार्यों को स्मरण किया। स्वामी श्रद्धानन्द जी पलवल ने स्वामी शक्तिवेश जी को बड़े ही निडर, संघर्षशील व उत्साही व्यक्तित्व का धनी बताया। कु. पूनम आर्या जी ने कहा कि माताएँ महापुरुषों को जन्म देने वाली बनें। कु. प्रवेश आर्या जी ने कहा कि बेटी बचेगी तभी तो महापुरुष पैदा होंगे।

इस अवसर पर स्वामी योगानन्द जी, दर्शनाचार्य सत्यकाम जी रोहतक, आचार्य योगेन्द्र जी वैदिक आश्रम रेवाड़ी, ब्र. दीक्षेन्द्र जी प्रधान सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा, श्री अतर सिंह स्नेही, आचार्य श्यामलाल दिल्ली, योगाचार्य सत्यपाल वत्स, योगाचार्य रमेश कोयलपुर, पहलवान प्रेमदेव खुड्डन, श्रीमती मूर्तिदेवी, छात्रा नम्रता, विजय आर्य, चन्द्रपाल माजरा, मा. पनसिंह, श्री भगवान सिंह आदि वक्ताओं ने स्वामी शक्तिवेश जी के दिखाये वैदिक मार्ग पर चलने का संकल्प किया और कहा कि जो कार्य उन्होंने अधूरा छोड़ दिया था उसे हम सभी मिलकर पूरा करेंगे।

कार्यक्रम के अध्यक्ष स्वामी धर्ममुनि जी ने कहा कि यह हर्ष की बात है कि आयोजकों ने उनके सुझाव के अनुसार स्वामी शक्तिवेश जी का जन्मदिवस उनके पैतृक ग्राम कलोई (झज्जर) में जन्माष्टमी पर्व पर मनाने का निर्णय लिया। कार्यक्रम में श्री पूर्ण सिंह देशवाल प्रधान गुरुकुल झज्जर, मा. द्वारका प्रसाद प्रधान आर्य समाज झज्जर, पूर्व कालेज प्राचार्य डॉ. एच.एस. यादव, डॉ. धर्मवीर आर्य आदि गणमान्य महानुभावों ने वैदिक भक्ति संगीत (सम्पादित पं. रमेशचन्द्र वैदिक) पुस्तक का विमोचन किया। ऋषि लंगर की उत्तम व्यवस्था दोनों दिन की गई। मंच का संचालन सुभाष आर्य ने किया।

– पं. जयभगवान

आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश+तेलंगाना के तत्वावधान में 'स्वामी दयानन्द सरस्वती और आर्य समाज' विषय पर

निबन्ध प्रतियोगिता का किया गया भव्य आयोजन

कन्या दयानन्द विद्यामंदिर, महबूबनगर की छात्रा ने जीता 5 हजार रुपये का प्रथम पुरस्कार

आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश+तेलंगाना के तत्वावधान में प्रान्त की समस्त आर्य समाजों के विद्यालयों के विद्यार्थियों के लिए स्वामी दयानन्द के जन्मदिवस तथा बोधोत्सव के अवसर पर 'स्वामी दयानन्द सरस्वती और आर्य समाज' विषय पर निबन्ध प्रतियोगिता का भव्य आयोजन 'पं. नरेन्द्र भवन' में किया गया। निबन्ध प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली छात्रा को 5 हजार रुपये की नकद राशि, स्मृति चिन्ह तथा प्रमाण पत्र प्रदान किया गया। प्रथम पुरस्कार पाने वाली कन्या दयानन्द विद्या मंदिर महबूबनगर की रही। द्वितीय पुरस्कार 3 हजार रुपये, तृतीय पुरस्कार 2 हजार रुपये तथा चार अन्य पुरस्कार एक हजार रुपये के प्रदान किये गये। सभी विद्यार्थियों को प्रमाण पत्र तथा आने–जाने का मार्ग व्यय प्रदान किया गया। विद्यार्थियों ने अपनी पूरी प्रतिभा का परिचय देते हुए अन्य सभी विद्यार्थियों को अत्यन्त प्रोत्साहित तथा उत्साह से सराबोर कर दिया। इस आयोजन से प्रेरित होकर सभा ने निर्णय लिया है कि आगामी अगस्त माह में सत्यार्थ प्रकाश के सातवें और आठवें समुल्लास पर परीक्षा का आयोजन किया जायेगा जिसमें प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थी को 10 हजार रुपये का पुरस्कार प्रदान किया जायेगा।

सभा के पदाधिकारी श्री अशोक कुमार एडवोकेट, श्री सत्यनारायण रेड्डी एडवोकेट, सभा प्रधान ठा. लक्ष्मणराव आर्य तथा सभा मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली छात्रा को नकद राशि, स्मृति चिन्ह तथा प्रमाण पत्र प्रदान करते हुए

आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में आर्य समाज जवाहर नगर, पलवल में सत्यार्थ प्रकाश सम्मेलन भव्यता के साथ सम्पन्न

महर्षि दयानन्द जयन्ती के उपलक्ष्य में 4 फरवरी, 2018 को आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में आर्य समाज जवाहर नगर, पलवल, हरियाणा में सत्यार्थ प्रकाश सम्मेलन भव्यता के साथ सम्पन्न हो गया। सम्मेलन में प्रातः 8 से 9.30 बजे तक 21 कुण्डीय यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें ब्रह्मा पद को श्री देशराज शुक्ल, श्री ओम प्रकाश शास्त्री व आचार्या निशा, कन्या गुरुकुल हसनपुर ने सुशोभित किया। कन्या गुरुकुल हसनपुर की छात्राओं ने वेद पाठ किया तथा यज्ञ का संयोजन पं. तुलाराम आर्य, श्री नारायण सिंह आर्य, श्री चन्द्रपाल आर्य, श्री राजपाल दहिया तथा श्री मदन मोहन आर्य ने संभाला।

इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के अतिरिक्त प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् डॉ. सोमदेव शास्त्री अध्यक्ष वैदिक मिशन मुम्बई, आर्य भजनोपदेशक श्री भूपेन्द्र सिंह आर्य, श्री धर्म प्रकाश आर्य प्रधान मनफूल सिंह आर्य स्मारक समिति आदि विद्वानों ने अपने विचार प्रस्तुत किये। सम्मेलन की अध्यक्षता आर्य समाज जवाहरनगर, पलवल के प्रधान प्रो. जयप्रकाश आर्य ने की तथा मुख्य संयोजन युवा संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द जी ने किया। इस अवसर पर श्री भूपेन्द्र सिंह आर्य को 11 हजार रुपये की राशि, शॉल तथा स्मृति चिन्ह देकर सार्वजनिक रूप से सम्मानित किया गया।

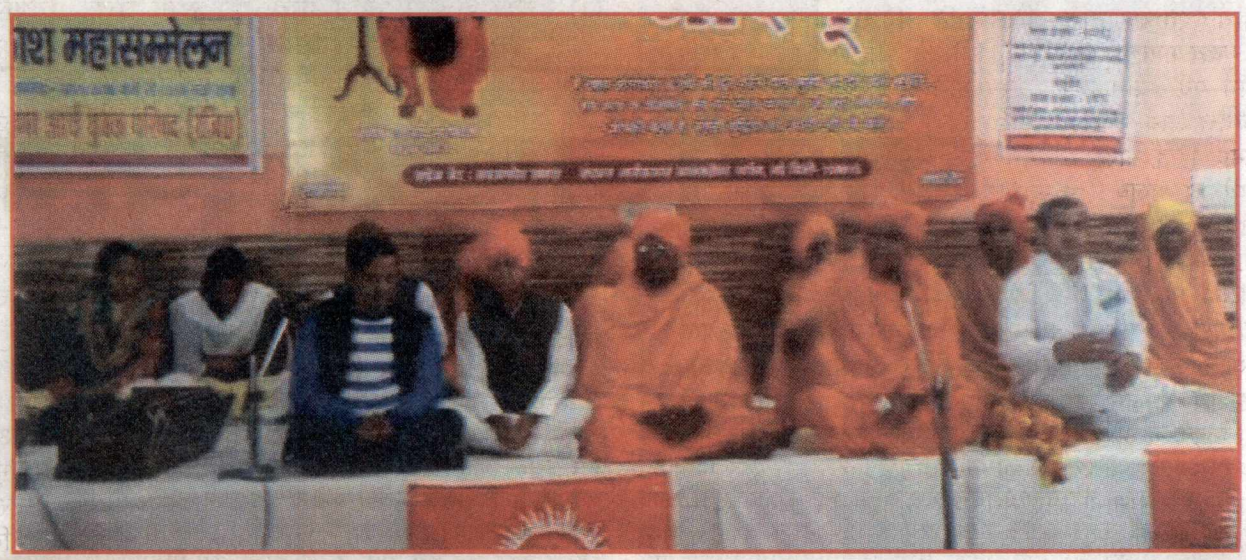

सम्मेलन में मुख्य वक्ता आचार्य सोमदेव शास्त्री ने सत्यार्थ प्रकाश की महिमा पर प्रकाश डालते हुए बताया कि किस प्रकार महर्षि दयानन्द के व्याख्यान से प्रभावित होकर राजा जयकिशन दास ने महर्षि से आग्रह किया था कि वे अपने विचारों को लिपिबद्ध करवा दें, ताकि बाद में लोग उनसे लाभान्वित होते रहें। राजा जयकिशन दास ने स्वामी जी से यह भी कहा कि उन्हें वे लिखने वाला व्यक्ति भी उपलब्ध करायेंगे तथा लिखी हुई सामग्री को प्रकाशित करने का दायित्व भी स्वयं अपने ऊपर लेंगे। स्वामी जी ने उनका प्रस्ताव स्वीकार कर लिया तथा साढ़े तीन महीने में सत्यार्थ प्रकाश लिखवाकर तैयार कर लिया। स्वामी जी का पाण्डित्य, विद्वता एवं प्रतिभा अद्भुत थी जो उन्होंने इतने थोड़े समय में ऐसे महान ग्रन्थ को तैयार कर दिया जिसमें 377 ग्रन्थों के उद्धरण तथा 1500 से अधिक मन्त्र एवं श्लोक उद्धृत करके उन्होंने सिद्ध कर दिया कि उनकी विद्वता, स्मरण शक्ति एवं प्रतिभा अद्वितीय थी। आचार्य जी ने बताया कि सत्यार्थ प्रकाश पर दर्जनों बार प्रतिबन्ध लगाने की कोशिश की गई, लेकिन सभी कोशिशें निष्फल हुईं। सत्यार्थ प्रकाश को पढ़कर गुरुदत्त विद्यार्थी जैसा उद्भट्ट वैज्ञानिक विद्वान् लिखता है कि उन्होंने 18 बार सत्यार्थ प्रकाश पढ़ा और जब–जब पढ़ा तब–तब उन्हें नई जानकारियाँ प्राप्त हुई। सत्यार्थ प्रकाश को पढ़कर बहुत लोगों ने समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त की। जिनमें अमर शहीद रामप्रसाद बिस्मिल, लाला लाजपत राय, गुरुदत्त विद्यार्थी आदि के नाम उल्लेखनीय है।

इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने अपने ओजस्वी व्याख्यान में सत्यार्थ प्रकाश को एक कालजयी ग्रन्थ बताते हुए कहा कि जो व्यक्ति सत्यार्थ प्रकाश को पढ़ लेगा वह पाखण्ड एवं अन्धविश्वास में नहीं फंस सकता। सत्यार्थ प्रकाश व्यक्ति के भ्रम एवं शंकाओं को भगा देता है। सत्यार्थ प्रकाश का महत्त्व इसी बात से मालूम होता है कि भारत के चार प्रधानमंत्रियों सर्वश्री चौ. चरण सिंह, अटल बिहारी वाजपेयी, इन्द्र कुमार गुजराल तथा चन्द्रशेखर ने प्रधानमंत्री बनने के पश्चात् कहा कि उन्हें इस पद तक पहुँचाने में महर्षि दयानन्द के सत्यार्थ प्रकाश की अहम भूमिका रही है। स्वामी आर्यवेश जी ने उपस्थित जन–समूह को संकल्प दिलवाया कि वे एक साल में सत्यार्थ प्रकाश का आद्योपान्त स्वाध्याय करेंगे तथा अन्य लोगों को भी इसके स्वाध्याय की प्रेरणा देंगे। स्वामी आर्यवेश जी ने सत्यार्थ प्रकाश सम्मेलन के आयोजकों को भी इस महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम के लिए साधुवाद दिया।

सम्मेलन के संयोजक स्वामी श्रद्धानन्द जी ने आगन्तुक विद्वानों एवं अतिथियों का शॉल, स्मृति चिन्ह आदि भेंट कराकर सम्मान किया। सत्यार्थ प्रकाश सम्मेलन की सफलता में सर्वश्री ठाकुर लाल आर्य, महेश अग्रवाल, विजेन्द्र आर्य, यादराम विद्यार्थी, कुं. रमेश कुमार, कुंवर पाल तंवर, मित्रसेन वर्मा, यशपाल गोयल, आर्य सुरेन्द्र चौहान, दिनेश आर्य, रणजीत सिंह आर्य, रमेश आर्य आदि ने भी विशेष सहयोग किया। कार्यक्रम में प्रसिद्ध भजनोपदेशक महाशय खेमचन्द्र आर्य, श्री भजन लाल आर्य, वैद्य विजेन्द्र आर्य आदि भी उपस्थित थे। डॉ. रामजीत योगाचार्य ने कार्यक्रम में योग क्रियाओं का प्रदर्शन कराया जिसे लोगों ने विशेष पसन्द किया। इस पूरे कार्यक्रम का ध्वजारोहण श्रीमती अलका गुप्ता प्राचार्या डी.ए.वी. स्कूल पलवल ने किया। सम्मेलन बड़े उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ।

दैनिक जीवन में अग्निहोत्र

– डॉ. धर्मेन्द्र कुमार शास्त्री

सनातन प्राचीन आर्य वैदिक संस्कृति के अनुसार नित्यकर्म बतलाये गये हैं। जिन्हें सभी गृहस्थ, प्रतिदिन किया करें, धनी हो या निर्धन, बड़ा हो या छोटा, प्रत्येक के लिए आवश्यक होने से उन नित्य यज्ञों का क्षेत्र बड़ा विस्तृत है। वे मनुष्यमात्र के समान कर्म हैं, इसलिए उन्हें महायज्ञ कहते हैं। भगवान् मनु ने इन पांच यज्ञों का अनुष्ठान नित्य एवं आवश्यक बतलाया है –

ऋषियज्ञं देवयज्ञं भूतयज्ञं च सर्वदा।
नृयज्ञं पितृयज्ञं च यथाशक्तिर्न हापयेत्।।

– मनु. 4/22

जहाँ तक हो सके (ऋषियज्ञं) ब्रह्मयज्ञ (देवयज्ञं) देवयज्ञ (भूतयज्ञं) बलिवैश्वदेवयज्ञ (नृयज्ञं) अतिथि यज्ञ और (पितृयज्ञं) पितृयज्ञ को (न) नहीं (हापयेत्) छोड़ें।

महाभारतकार वेदव्यास जी के उपदेश अनुसार –

अहन्यहनि ये त्वेतानकृत्वा भुंजते स्वयम्।
केवलं मलमश्नन्ति ते नरा न च संशयः।।

– महाभारत अश्व 104/16

(अहन्यहनि) प्रतिदिन ये जो (एतान्) इन महायज्ञों को (अकृत्वा) किये बिना स्वयं (भुंजते) खाते–पीते हैं, (ते) वे (नराः) नर (केवलं) केवल (मलं) मल खाते हैं (च) वस्तुतः इसमें (संशयः) संशय नहीं है।

आईये! पंचमाहयज्ञ पर क्रमशः विचार करते हैं सबसे प्रथम है ब्रह्मयज्ञ प्रतिदिन प्रातः तथा सायंकाल प्रभु के चरणों में उपस्थित होकर, अपने विनय तथा प्रेम का प्रकाश करना और परमपिता के गुणों की आराधना करना ब्रह्मचर्य का एक भाग है।

स्वाध्याय अर्थात् मोक्षशास्त्रों का अध्ययन करना दूसरा भाग है। शास्त्रों को पढ़ने तथा उनकी बातों पर आचरण करने से उनकी सच्चाई का अनुभव होता है और धर्म में श्रद्धा बढ़ती है। मनुस्मृतिकार कहते हैं –

यथा यथा हि पुरुषः शास्त्रं समधिगच्छति।
तथा तथा विजानाति विज्ञानं चास्य रोचते।।

– मनु. 4/20

(यथा यथा) ज्यों–ज्यों पुरुष शास्त्र को (समधिगच्छति) समझता जाता है (तथा–तथा) त्यों–त्यों (विजानति) विशेष जाना जाता है और उसको रुचिकर होता है। स्वाध्याय करने वाला आत्मा के स्वरूप से भलीभांति परिचित होकर ठीक–ठीक चिन्तन करना सीख जाता है। सन्ध्योपासना योग द्वारा आत्मिक मर्मों के मनन का अभ्यास हो जाता है। जब स्वाध्याय तथा भक्तियोग दोनों में सम्पन्न हो जाता है, तो प्रभु के प्रकाश का पात्र बनता है।

देवयज्ञ – इस प्रकार ब्रह्म अर्थात् ईश्वर और वेद के सत्संग से पवित्र होकर मनुष्य को चाहिए कि देवताओं का सत्संग करें। देव का अर्थ परमात्मा है। प्राकृतिक ज्योतियों, शक्तियों और विभूतियों को भी देव कहते हैं। विद्वान् जनों को भी देव कहते हैं। साधक को उचित है कि ब्रह्मयज्ञ में विशेष रूप से प्रभु के आन्तरिक प्रकाश को देखने के लिए उत्सुक होकर अन्तर्मुख होने का अभ्यास करें। देवयज्ञ में उसकी बाह्य विभूतियों और चमत्कारों का ध्यान करता हुआ, उसके विराट स्वरूप का चिन्तन करें।

पितृयज्ञ – प्रतिदिन अपने माता–पिता, आचार्य, गुरुजन तथा अन्य आश्रित सम्बन्धियों की सेवा तथा तृप्ति का ठीक–ठीक प्रबन्ध करना ही इस यज्ञ का तात्पर्य है। माता–पिता अपने सन्तान के लिए जो–जो कष्ट उठाते और अपना आराम छोड़कर अपने बच्चों के लिए जो कुछ करते हैं, उसका ऋण चुका सकना असम्भव है। अतः अपने वृद्ध, माता–पिता सबके प्रति सन्तान अपने कर्त्तव्य का पालन करें।

अतिथियज्ञ – यह चौथा महायज्ञ वहीं हो सकता है जहाँ पितृयज्ञ की प्रतिष्ठा हो। जब कोई विद्वान्, सदाचारी, संन्यासी, महात्मा, अनुभवी सज्जन हमारे घर आ पहुँचे, तो हमारा द्वार उसके स्वागत करने के लिए सदा खुला रहना चाहिए।

बलिवैश्वदेवयज्ञ – पांचों महायज्ञ द्वारा प्राणिमात्र से सहानुभूति प्रकट करने का उपदेश है। ब्रह्मयज्ञ में महान् प्रभु का ध्यान कर, साधक महान् बनना चाहता है। क्योंकि जिस प्रकार के संकल्पमय आदर्श हमारे सम्मुख होते हैं, हम वैसे ही ढलते जाते हैं। देवयज्ञ में वह भौतिक देवताओं में प्रभु की ज्योति को अनुभव करता हुआ, उनके समान उपकारी बनने का यत्न करता है। पितृयज्ञ पारिवारिक एकता को बढ़ाने वाला है। अतिथियज्ञ जातीय प्रेम तथा संगठन का अभ्यास क्षेत्र है और अन्त में सब संकोच का त्याग सिखाने के लिए भूतयज्ञ आता है। जैसे ब्रह्म सबके हृदय में निवास करता है, ऐसे ही साधक भी प्राणिमात्र के हृदय में प्रविष्ट होकर उस ब्रह्म का अनुभव प्राप्त करें। किसी के हृदय में निवास करना हो तो उसके साथ सच्चा प्रेम और उसकी सदा सहायता करनी चाहिए।

– पूर्व सचिव,
दिल्ली संस्कृत अकादमी, दिल्ली सरकार
एसोसिएट प्रोफेसर (संस्कृत)
एस.जी.एन.डी. खालसा कालेज,
दिल्ली विश्वविद्यालय,
मो.:–9999426474

अग्निहोत्र (एक अध्ययन) 50 प्रतिशत छूट में प्राप्त करें

अग्निहोत्र एक अध्ययन पुस्तक डॉ. धर्मेन्द्र कुमार शास्त्री द्वारा लिखित महत्त्वपूर्ण पुस्तक है। डॉ. धर्मेन्द्र शास्त्री, दिल्ली संस्कृत अकादमी के सचिव रह चुके हैं। वर्तमान में वे एसोसिएट प्रोफेसर (संस्कृत) एस.जी.एन.डी. खालसा कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय में कार्यरत हैं। उन्होंने अनेकों पुस्तकों का प्रणयन किया है। साथ ही देश–विदेशों में सैकड़ों सेमिनारों, सम्मेलनों में भाग लेकर शोध पत्र प्रस्तुत किये हैं। लेखक ने 'अग्निहोत्र एक अध्ययन' में यज्ञ के महत्त्व की वैज्ञानिक व्याख्या की है जो विद्वानों, शोधकर्ताओं, समाजसुधारकों, पुस्तकालयों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी। पुस्तक के प्रत्येक अध्याय में लेखक की वैज्ञानिक प्रतिबद्धता, सूक्ष्म विवेचनशैली, तार्किकता साफ झलकती है। पुस्तक में प्राचीन मान्यताओं के साथ–साथ वैज्ञानिक कसौटी पर अग्निहोत्र की उपयोगिता को कसकर अपने लेखन में हस्तसिद्ध हुए हैं। यह ग्रन्थ सबके लिए उपयोगी है। इसकी महत्ता को देखते हुए जन–सामान्य तक पहुंचाने के लिए लेखक ने पुस्तक पर 50 प्रतिशत का मूल्य निर्धारित किया है।

पुस्तक का मूल्य – 500 रुपये, पृष्ठ–377

प्राप्ति स्थान : (1) वेदार्ष महाविद्यालय, 119, गौतमनगर, नई दिल्ली–49,
(2) सोमेन्द्र सिंह, ए–19, न्यू जनकपुरी अजन्ता कालोनी,
गढ़ रोड, मेरठ, मो.:–9410816724, 9756747123,
(3) हरीश शास्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश,
5, मीराबाई मार्ग, लखनऊ मो.:–9320622205

जड़पूजा के विविध रूप

– डॉ. धीरज कुमार आर्य

असतो मा सद्गमय तमसो मा ज्योतिर्गमय मृत्योर्माऽमृतं गमय।।

इन उपनिषद् वचनों में भक्त ईश्वर से असत् से सत् की ओर, अंधकार से प्रकाश की ओर तथा मृत्यु से अमृत की ओर ले चलने की प्रार्थना करता है। प्राणीमात्र मृत्यु से छूटना चाहता है और अमृत आनन्द की कामना करता है। कारण से कार्य होता है। कार्य मृत्यु को हटाने के लिए कारण को हटाना पड़ता है। जिसका यहां स्पष्ट उल्लेख है। कार्य मृत्यु है तो कारण असत् अर्थात् अज्ञानान्धकार है। इसी प्रकार कार्य आनन्द है तो कारण सत् अर्थात् *तत्वज्ञानरूपी प्रकाश है। योगशास्त्र में भी कहा है–* अविद्या क्षेत्रमुत्तरेषां...। इसके भाष्य में महर्षि व्यास भी लिखते हैं– अविद्या नेत्री मूलं सर्वक्लेशानाम् अविद्या ही सर्व क्लेशों की मूल नेत्री है। जबकि इसके विपरीत विद्या (तत्वज्ञान) अमृत (मोक्ष) को देने वाली है। तत्वज्ञानाद् निःश्रेयसाधिगमः (न्याय०), विद्ययाऽमृतमश्नुते। यजु०।।

जिस प्रकार अंधकार की निवृत्ति का एक मात्र उपाय प्रकाश है उसी प्रकार अविद्या की निवृत्ति का एकमात्र उपाय विद्या है। अतः मनुष्य को यदि सर्वविध दुःखों से छूटकर ईश्वर के परमानन्द को, अमृत को, मोक्ष को पाना है तो उसे अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी पड़ेगी तथा तदनुसार आचरण करना पड़ेगा। "नान्यपन्था विद्यतेऽयनाय" अन्य कोई मार्ग नहीं है।

महर्षि देव दयानन्द ने वेदादि शास्त्रों के इस सिद्धांत को भली–भांति समझा था तभी आजीवन सत्य का प्रचार किया, सत्याचरण किया, सत्यार्थप्रकाश लिखा एवं सब सत्यविद्याओं के पुस्तक वेदों का उद्धार किया। किन्तु दुर्भाग्य है उस मानव जाति का जो उनके देहत्याग के १२५ वर्ष बाद भी वेदभानु के प्रकाश में उलूकवत् चक्षु उन्मीलन न कर सकी और न करना चाहती है।

स्वयं को दयानन्द के अनुयायी कहलाने वालों में भी पुनः अविद्या पैर पसार रही है। जिसका कारण वेदों के पढ़ने–पढ़ाने और सुनने–सुनाने रूपी परमधर्म को छोड़ना तथा गुरुदेव दयानन्द पर श्रद्धा न करना ही है।

जिस जड़पूजा का महर्षि ने घोर खण्डन किया वही जड़पूजा प्रकारान्तर से आर्यों के व्यवहार में आ रही है। यथा–चित्रों पर पुष्प चढ़ाना, धार्मिक पुस्तक को नमन करना और अग्निहोत्र के पश्चात् 'हाथ जोड़ झुकाय मस्तक....' यज्ञ प्रार्थना बोलते हुए हाथ जोड़कर नतमस्तक होना आदि।

प्रायः देखा जाता है कि किसी व्यक्ति के दिवंगत हो जाने पर उसके परिजन तथा सम्बन्धी उसके चित्र पर पुष्प अथवा पुष्पमालाएँ चढ़ाते हैं जो सर्वथा अवैदिक एवं मूर्खतापूर्ण कार्य है। चित्र केवल स्मारक अर्थात् अमुक व्यक्ति इस रूप, रंग एवं मुखाकृति का था, इस बात का स्मरण कराने वाला होता है, जिससे हम उसके जीवन से कुछ प्रेरणा ले सकें। इसके अतिरिक्त अन्य कोई प्रयोजन चित्र अथवा प्रतिमा का नहीं होता है। जब चित्र अथवा प्रतिमा पर पुष्प चढ़ाये जाते हैं तो मन में कदाचित् यह विचार काम कर रहा होता है कि इससे उस दिवंगत का सम्मान होता है जबकि सच्चाई कुछ और ही है। दिवंगत आत्मा के प्रति श्रद्धा अथवा सम्मान करना यही है कि उसके जीवन में जो सद्गुण, सदाचरण तथा उनकी जो सत्शिक्षा है, उन्हें हम धारण करें क्योंकि श्रत् सत्यं दधाति यथा क्रिया सा श्रद्धा। जिससे सत्य धारण किया जाये उस क्रिया का नाम श्रद्धा है। यह श्रद्धा करना ही उसका सम्मान है। यही उसकी पूजा है क्योंकि जो ज्ञानादि गुण वाले का यथायोग्य सत्कार करना है उसको पूजा कहते हैं। (आर्योद्देश्य०) पूजा नाम सत्कारस्स– ज्जनानाम् (वेदविरूद्ध– मतखण्डन)। सत्कार चेतन का ही होता है ज्ञानादि रहित जड़ पदार्थ का नहीं। जड़ पदार्थों का तो समुचित उपयोग एवं समुचित रक्षा करनी होती है। यही उनकी पूजा है। अतः चित्र, प्रतिमा अथवा पुस्तकादि जड़ वस्तुओं को सम्भाल कर रखना तथा उन्हें धूल मिट्टी से बचाना ही उनकी पूजा है न कि उन्हें सिर नमाना, पुष्पचढ़ाना तथा हाथ जोड़ना आदि।

प्रायः देखा जाता है कि यदि कोई पुस्तक हाथ से छूटकर भूमि पर गिर जाती है तो बालक ही नहीं शिक्षित युवा, वृद्ध भी उसे उठाकर अपने मस्तक से लगाते हैं। मुसलमान भी कुरान के अध्ययन करने से पूर्व एवं पश्चात् प्रायः उसे मस्तक से लगाते हैं। इसी प्रकार सिख गुरुग्रन्थ साहब के आगे नत–मस्तक होते हैं, उसे चंवर झुलाते हैं, उस पर रुमाले चढ़ाते हैं। इसका कारण पूछने पर सब यही कहते हैं कि पुस्तक का सम्मान करना कर्तव्य होता है और हिन्दुओं को तो सरस्वती देवी के कुपित होने का भय होता है इसलिये वे ऐसा करते हैं किन्तु ये सब विद्या एवं बुद्धि विरुद्ध क्रियाएँ हैं जो उनके अज्ञान को प्रकट करती है क्योंकि पुस्तक जड़ है उसका सम्मान उसका उचित उपयोग एवं उचित रक्षा है और उसमें जो विद्या लिखी हुई है उसका भी सम्मान उसे आचरण में लाने से है। जैसा सरस्वती का चित्र बनाया जाता है वह सब प्रतीक है। प्रतीक गौण तथा प्रतीयमान मुख्य है। पुस्तक के आगे हाथ जोड़ने से या उसे मस्तक से लगाने से सरस्वती प्रसन्न नहीं होती है तथा न करने से कुपित ही होती है। विद्या का परिश्रम पूर्वक विधिवत् ग्रहण ही सरस्वती का प्रसन्न होना है।

महर्षि दयानन्द शिक्षाप– त्रीध्वान्तनिवारण पुस्तक में इस लेख कि "मेरे आश्रित पुरुष शिक्षापत्री का प्रतिदिन पाठ करें और जो विद्याहीन होवें प्रीति से उसका श्रवण करें और श्रवण करना भी न बने तो इस शिक्षापत्री की अत्यन्त प्रीति से प्रतिदिन पूजा करें" के खण्डन में स्पष्ट लिखते हैं कि इस जड़, व्यर्थ पुस्तक की पूजा करने का उपदेश देने में (लेखक की) अयोग्यता मालूम पड़ती है। सिख मत के प्रसंग में लिखते हैं– मूर्तिपूजा तो नहीं करते, किन्तु उससे विशेष ग्रन्थ की पूजा करते हैं। क्या यह मूर्तिपूजा नहीं है? किसी जड़ पदार्थ के सामने सिर झुकाना वा उसकी पूजा करनी, सब मूर्तिपूजा है। (स०प्र० ११वाँ समु०)

महर्षि के जीवन की एक घटना भी इस विषय पर प्रकाश डालती है। ऋषिवर ने एक बार काजी जी का समाधान करके कुरान को हाथ से पृथ्वी पर रख दिया तो काजी ने कहा– आपने यह क्या किया कि कुरान को पाँव में रख दिया। स्वामी जी– काजी साहब! तनिक विचार, करो, क्या काजी नाम ही के कहलाते हो। कागज और स्याही कैसे बनती है, और छापाखाने में किस पर कागज छपते हैं और कलम क्या चीज है और कहां उत्पन्न होती है? इस पर निरूत्तर होकर काजी जी उठ खड़े हुए और उनके साथ सब यवन शान्त होकर चले गये। (लेखराम पृ०–५४८)

इसी प्रकार जो सज्जन हवन में अग्नि के समक्ष हाथ जोड़ते हैं तो क्या वह जड़पूजा नहीं है? यदि कहो कि परमेश्वर को नमन करते हैं अग्नि को नहीं, तो यह कहना ठीक नहीं क्योंकि ईश्वर सर्वव्यापक है। जब हाथों में हैं क्यों जोड़ते हो, सिर में है सिर क्यों नमाते हो? और जो व्याप्य (अग्नि, वेदि आदि) को करते हो तो मूर्तिपूजकों से आप भिन्न नहीं हो सकते। अतः अग्निहोत्र में अग्नि अथवा वेदि को हाथ जोड़ना, सिर नमाना आदि अवैदिक कर्म होने से त्याज्य है। हमें गुरुवर देवदयानन्द के ग्रन्थों का गम्भीर स्वाध्याय करके तदनुसार आचरण करने का सर्वथा प्रयास करना चाहिए तभी कल्याण होगा।

–ग्राम-पोस्ट : रमाला
जिला-बागपत (उत्तर-प्रदेश)
दूरभाष : ९९२७५४३७४४

आर्य समाज (देहली) दीवान हाल में होली के पवित्र अवसर पर
रविवार, दिनांक 25 फरवरी, 2018 को प्रातः 10 बजे से

होली मंगल मिलन समारोह का भव्य आयोजन

इसमें यज्ञ, भजन कवितापाठ एवं वैदिक विद्वानों के प्रवचन होंगे।
आप सपरिवार इष्टमित्रों सहित सादर आमंत्रित हैं।

निवेदक

कृष्ण गोपाल दीवान	मेजर डॉ. रविकान्त	तेजपाल मलिक
संरक्षक	प्रधान	मंत्री
9899165452	9871056050	9871022842

आर्य समाज दीवान हाल, चांदनी चौक, दिल्ली

आर्य समाज, भगचुरी, पो.-नौसर, उधमसिंहनगर, उत्तराखण्ड का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

दिनांक 13 व 14 फरवरी, 2018 को आर्य समाज भगचुरी, उत्तराखण्ड का 10वाँ वार्षिकोत्व हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस शुभअवसर पर यज्ञ के ब्रह्मा के रूप में स्वामी सोम्यानन्द सरस्वती–मथुरा सुशोभित हुए। स्वामी जी ने अपने प्रवचनों में आर्य समाज के नियमों की विस्तार से व्याख्या की और पंचमहायज्ञों को मानव कल्याण हेतु आवश्यक बताया। प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन काल में यश, कीर्ति, धन व सुख प्राप्ति हेतु ईश स्मरण, स्वाध्याय, सेवा, सत्संग और संगठन को दैनिक व्यवहार में पालन करना आवश्यक बताया। इस अवसर पर महात्मा सम्मानमुनि अमरोहा ने भी अपने प्रवचनों से वैदिक धर्म की सार्थकता को बताया। उत्सव के मुख्य संयोजक श्री हरीश कुमार शास्त्री रहे और उन्होंने अपने सहयोगियों की सहायता से उत्सव की सराहनीय व्यवस्था की। कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा।

– हरीश कुमार शास्त्री, संयोजक

!! ओ३म् !!

महर्षि दयानन्द जी

आर्य समाज के महान नेता, त्यागी-तपस्वी संन्यासी,
युवाओं के प्रेरणा-स्त्रोत स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज के
81वें जन्मदिवस के अवसर पर

स्वामी इन्द्रवेश जी

11वां बेटी बचाओ चतुर्वेद पारायण महायज्ञ

दिनांक : मंगलवार 27 फरवरी 2018 से रविवार 11 मार्च 2018 तक
स्थान : स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ (आश्रम), ग्राम-टिटौली, जिला रोहतक (हरि0)
समय : प्रतिदिन प्रातः 8:00 बजे से 11:00 बजे तक, सायं 3:00 बजे से 6:00 बजे तक ।

ब्रह्मा
स्वामी चन्द्रवेश जी, आचार्य
स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ (आश्रम)
ग्राम टिटौली, जिला-रोहतक (हरि0)

अध्यक्षता
स्वामी आर्यवेश जी, प्रधान
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,
नई दिल्ली

मुख्य आकर्षण

★ चतुर्वेद पारायण महायज्ञ
★ महिला दिवस पर विशेष कार्यक्रम
★ स्वामी इन्द्रवेश जयंती समारोह
★ कार्यकर्ता अभिनन्दन समारोह

संकल्प : इस महायज्ञ में समाज के प्रतिष्ठित प्रतिनिधि, डॉक्टर, वकील, शिक्षाविद् जन प्रतिनिधि, धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक नेता एवं हजारों स्त्री-पुरूष, छात्र एवं छात्राएं आहूति देकर कन्या भ्रूणहत्या, नशाखोरी एवं पाखण्ड के विरूद्ध संकल्प लेंगे।

विशेष : महायज्ञ मे उच्च कोटि के संन्यासी, विद्वानों एवं भजनोपदेशकों द्वारा कार्यक्रम निरन्तर चलता रहेगा। यज्ञमान बनने के इच्छुक महानुभाव अभी से अपनी सूचना देकर कृतार्थ करें। आप सभी भी महायज्ञ में आहूति डालकर राष्ट्र के नव-निर्माण में अपनी भूमिका निभाएं।

आयोजक : सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्
एवं स्वामी इन्द्रवेश फाउंडेशन व युवा निर्माण अभियान
कार्यालय : स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ (आश्रम) ग्राम टिटौली, जिला रोहतक (हरि0)
सम्पर्क : 9416630916, 9354840454, 9466430772

आर्य समाज, धौरूआ बाजार (अम्बेडकर नगर) का चतुर्थ वार्षिक सम्मेलन सम्पन्न

सहर्ष सूचित करना है कि आर्य समाज धौरूआ बाजार (अम्बेडकर नगर) का चौथा वार्षिक सम्मेलन सफलतापूर्वक दिनांक 5 से 7 फरवरी, 2018 को हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हो गया। सम्मेलन में स्वामी सोम्यानन्द सरस्वती–मथुरा यज्ञ के ब्रह्मा रहे। उन्होंने अपने प्रवचनों में यज्ञ की उपयोगिता, व्यवहारिकता और लाभदायिकता पर विस्तार से प्रकाश डाला। तदोपरान्त अन्य सत्रों में स्वामी जी ने मानव समाज में व्याप्त कुरीतियों, पाखण्डों, अनैतिक व्यवहारों, भ्रूण हत्या, शराब सेवन, नारी उत्पीड़न आदि समस्याओं के कारण और निदान पर विस्तार से प्रकाश डाला और उपस्थित जनसमूह से उक्त बुराईयों को दूर करने के संकल्प दिलवाये।

स्वामी जी के अतिरिक्त आचार्य विमल किशोर उपदेशक लखनऊ ने भी अपने विचार प्रस्तुत किये। राममगन आर्य भजनोपदेशक ने अपने भजनों के माध्यम से कुरीतियों और पाखण्डों को त्यागने का आह्वान किया। सम्मेलन का आयोजन मुख्य रूप से श्री राम कुशल और श्री दयाशंकर आर्य ने संयुक्त रूप से किया। सम्मेलन के उपरान्त आर्य समाज का विधिवत गठन स्वामी जी के दिशा–निर्देशन में निम्न रूप से सम्पन्न हुआ। प्रधान श्री दयाशंकर आर्य, मंत्री श्री रामकुशल आर्य, कोषाध्यक्ष श्री रामशब्द आर्य के अतिरिक्त 9 कार्यकारिणी के सदस्य भी चुने गये। सम्मेलन में निवास व भोजन आदि की व्यवस्था सराहनीय रही। निकटवर्ती गाँव की जनता ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और सम्मेलन को ज्ञानवर्द्धक, समाजसुधारक और वैदिक धर्म के प्रचार–प्रसार का उत्तम माध्यम बताया।

– रामकुशल आर्य, मंत्री

टंकारा (गुजरात) में आयोजित प्रतियोगिता में गुरुकुल प्रभात आश्रम के विद्यार्थी ने प्रथम स्थान प्राप्त किया

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वतीजी के बोधोत्सव के उपलक्ष्य में उनकी जन्म–भूमि टंकारा गुजरात में महर्षि दयानंद स्मारक ट्रस्ट द्वारा आयोजित स्वामी विरजानंद पुरस्कार (योगदर्शन एवं वेदभाष्य प्रतियोगिता) में प्रभात आश्रम के विद्यार्थी तरुण कृष्ण ने प्रथम स्थान प्राप्त कर पांच सहस्त्र की प्रतियोगिता जीती। प्रभात आश्रम की परंपरानुसार इस अवसर पर हर्षोल्लासपूर्वक सम्मान–सभा का आयोजन किया गया और तरुण कृष्ण को सम्मानित किया गया, इस अवसर पर पूज्य श्री स्वामी जी ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि–यह सम्मान–सभा इसलिए आयोजित की जाती है कि इससे प्रेरित होकर विभिन्न प्रतियोगिताओं में सहभागिता हेतु अन्य छात्रों को भी उत्साहपूर्वक आगे आने का प्रयास करना चाहिए। ●

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/18-20
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2018-20]

सोशल मीडिया के माधयम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।
ई–मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में
विश्व इतिहास में पहली बार
अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन का
दिनांक : 6, 7 व 8 जुलाई, 2018 को
दिल्ली में होगा भव्य आयोजन
सभी गुरुकुल एवं आर्यजन अभी से तैयारी प्रारम्भ कर दें।
निवेदक
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5, आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002
दूरभाष :– 011–23274771, 23260985
ई–मेल :– sarvadeshikarya@gmail.com, sarvadeshik@yahoo.co.in

आर्य समाज मंदिर (ए.सी.–ब्लाक) टैगोर गार्डन, नई दिल्ली में स्व. श्रीमती कमला शर्मा तथा स्व. डॉ. संजीव शर्मा एम.डी. की स्मृति में यज्ञ, भजन एवं वेदोपदेश का किया गया भव्य आयोजन

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का मानव जीवन की सार्थकता पर हुआ मार्मिक प्रवचन

आर्य समाज मंदिर (ए.सी. ब्लाक), टैगोर गार्डन, नई दिल्ली में शनिवार 17 फरवरी, 2018 एवं रविवार 18 फरवरी, 2018 को यज्ञ, भजन एवं वेदोपदेश का दो दिवसीय भव्य कार्यक्रम आयोजित किया गया। यह कार्यक्रम श्री अखिलेश शर्मा जी की धर्मपत्नी स्व. श्रीमती कमला शर्मा जी की प्रथम पुण्यतिथि तथा स्व. सुपुत्र लेफ्टीनेंट कर्नल डॉ. संजीव शर्मा एम.डी. की स्मृति में आयोजित किया गया। इस अवसर पर आचार्य वीरेन्द्र कुमार शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया तथा दोनों दिन श्री लक्ष्मीकान्त कान्डपाल के मनोहारी भजन हुए तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का अत्यन्त मार्मिक, ओजस्वी प्रवचन हुआ।

इस अवसर पर श्री जगदीश आर्य प्रधान आर्य समाज राजौरी गार्डन, श्री रवि चढ्ढा प्रधान पश्चिमी दिल्ली वेद प्रचार मण्डल, श्री पीयूष शर्मा, श्री मामचन्द्र रेवाड़िया सहित अनेकों गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

अपने ओजस्वी उद्बोधन में सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने मानव जीवन की सार्थकता तथा वैदिक सिद्धान्तों की चर्चा करते हुए कहा कि मनुष्य परमात्मा की विशेष कृति है और मनुष्य को ही उत्तम कर्म करते हुए उन्नति की ओर अग्रसर होने का अवसर प्राप्त है जो मनुष्य से इतर योनियों के प्राणियों को प्राप्त नहीं है। वे केवल भोग योनि के प्राणी हैं। अतः हमें मनुष्य जीवन को उत्तम कर्मों के द्वारा सार्थक बनाना चाहिए। स्वामी जी ने कहा कि यदि मनुष्य की बुद्धि विकृत हो जाये तो वह पशुओं से भी बदतर एवं खतरनाक कार्य कर सकता है और यदि मनुष्य की बुद्धि सन्मार्ग पर चलने वाली हो तो वह धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष के पुरुषार्थ चतुष्टय को अपनाकर अपने जीवन को आनन्द से ओत–प्रोत कर सकता है। मनुष्य के लिए आवश्यक है कि उसे 100 वर्ष तक जीने की इच्छा करनी चाहिए। यजुर्वेद के 40वें अध्याय के दूसरे मन्त्र में परमात्मा ने मनुष्य को प्रेरित करते हुए कहा है **'कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छत समाः। एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे।'** मन्त्र के अनुसार कर्म करते हुए 100 वर्ष तक जीने की जिजीविशा अर्थात् इच्छा बनाओ और ऐसे कर्म करो कि कर्मों में लिप्त न हो सके। इसका तात्पर्य यह है कि मनुष्य को निष्काम कर्म करने का अभ्यास बढ़ाना चाहिए। क्योंकि निष्काम कर्म ही हमें मुक्ति की ओर ले जा सकते हैं। 100 वर्ष तक जीने एवं निष्काम कर्म करने के लिए आवश्यक है कि मनुष्य को नियमित दिनचर्या सात्विक भोजन तथा सात्विक विचार के साथ अपने जीवन को उन्नत करना चाहिए। जिस व्यक्ति की दिनचर्या नियमित होती है, खान–पान सात्विक तथा शुद्ध होते हैं, जिसके विचार सात्विक होता है वह सदैव उन्नति की ओर बढ़ता है तथा उसमें प्राणिमात्र के प्रति करुणा, दया तथा सहृदयता उत्पन्न होती है। वैदिक सिद्धान्त के अनुसार निष्काम कर्म ही मनुष्य को मुक्ति की ओर ले जा सकते हैं। स्वामी जी ने कहा कि पुरुषार्थ चतुष्टय की पहली और अन्तिम सीढ़ी धर्म और मोक्ष को लोगों ने छोड़ दिया है और अर्थ तथा काम को ही जीवन का लक्ष्य बनाकर सबलोग जीवन जीने का प्रयास कर रहे हैं जिसके कारण अनैतिकता और अधर्म पनप रहे हैं। अनैतिक तरीके से धन उपार्जन तथा अनैतिक तरीके से वासनाओं की तृप्ति करने से मनुष्य का नैतिक पतन होता है और वह धीरे–धीरे धर्म को छोड़कर भौतिकता में संलिप्त हो जाता है। उन्होंने कहा कि एकमात्र धर्म ही है जो देह छोड़ने के बाद आत्मा के साथ जाता है। अतः अपने जीवन को धर्ममय बनाते हुए दूसरों के दुःख–दर्दों को दूर करने का निरन्तर प्रयास करते रहना चाहिए।

कार्यक्रम को सफल बनाने में श्री जगमोहन लाल नन्दा संरक्षक, श्री अखिलेश शर्मा प्रधान, श्री जगन्नाथ मल्होत्रा मंत्री, श्री वेद प्रकाश आहूजा कोषाध्यक्ष, आर्य समाज मंदिर टैगोर गार्डन तथा स्त्री आर्य समाज की संरक्षिका श्रीमती कृष्णा चढ्ढा, डॉ. संतोष कपूर प्रधाना, श्रीमती प्रतिभा मल्होत्रा मंत्रिणी और स्वर्ण अग्रवाल कोषाध्यक्षा का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। इस सम्पूर्ण कार्यक्रम का सारा व्यय श्री अखिलेश शर्मा प्रधान आर्य समाज टैगोर गार्डन ने स्वयं वहन किया।

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वेबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।